उसका अद्भुत प्रेम और अनुग्रह

सारा के पत्र में आपका स्वागत है !

प्रभु यीशु के अनमोल नाम में जो सब नामों में उँचा है , प्रेममय नमस्कार !

मेरे प्रिय मित्र, क्या आपने नए जीवन की आशा की है जो संपूर्ण शांति, आनन्द और प्रेम से भरपूर है? क्या आप निराशा, चिंता, अपराध, लज्जा, भय, आशाहिनता, अकेलेपण, यहाँ तक की मृत्यू और आत्महत्या के विचार से परेशान है?

आज (से) आप प्रभु यीशु में नए जीवन का आनन्द उठा सकते है। यह परमेश्वर की ओर से आपके लिए मुफ्त का दान है ! क्या आप इस नए जीवन को प्राप्त करने के लिए तैय्यार है? तब मेहरबानी से ध्यान से पढ़े ......

बाइबल कहती है......
परमेश्वर ने मनुष्य को अपनी समानता (पृथ्वी की मिट्टी से) में (बनाया) रचा। तब परमेश्वर ने उसकी नाक में अपनी सांस फूंका और उसमें जीवन का संचार हुआ। परमेश्वर ने प्रथम मनुष्य का नाम आदम रखा। (उत्पत्ति १:२७, २:७ देखें)

परमेश्वर आदम को (हव्वा) स्त्री (स्त्रीलिंग) के रुप में सहायता दी। वे अदन के उद्यान में रहने लगे। परमेश्वर ने उनसे कहा कि वे सब वृक्षों के फल बिना खटके खा सकतें है पर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल कभी न खाना, क्योंकि जिस दिन वे उसका फल खाए उसी दिन अवश्य मर जाएंगे। (उत्पत्ति २:१७-२५)

लेकिन जिस फल को परमेश्वर ने मना किया था, उसी को उन्होंने खाया और इस तरह आदम और हव्वा ने अनाज्ञाकारी होकर परमेश्वर के विरोध में पाप किया। इसका परिणाम यह हुआ कि वे आत्मिक रीति से मर गए (वे परमेश्वर से अलग हुए और उसके बाद शारिरिक रीति से भी मर गए- रोमियों ५:१२) और अदन के उद्यान से निकाल दिए गए।

बाइबल कहती है .....
"इसलिए जैसा एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया, और पाप के द्वारा मृत्यू आई, और इस रीति से मृत्यू सब मनुष्यों में फैल गई क्योंकि सबने पाप किया। " (रोमियों ५:१२)

"कोई भी धर्मी नहीं, एक भी नहीं" (रोमियों ३:१०)
"नि: सन्देह पृथ्वी पर कोई ऐसा धर्मी मनुष्य नहीं जो भलाई ही करे और जिससे पाप न हुआ हो।" (सभोपदेशक ७:२०)

“क्योंकि सबने पाप किया है और वे सब परमेश्वर की महिमा से वंचित हो गए है।” (रोमियों ३:२३)

“देखों, सभों के प्राण तों मेरे है, जैसा पिता का प्राण, वैसा ही पुत्र का भी प्राण है, दोनो मेरे ही है। इसलिए जो प्राणी पाप करे वही मर जाएगा।” (यहेजकेल १८:४)

“क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यू है”। (रोमियों ६:२३)

इस प्रकार संसार के सब लोग पाप और स्त्राप के दास बन गए, और अंत में नरक की आग में डाल दिए जाएंगे, <u>लेकिन</u> ......

“.....परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु यीशु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है।” (रोमियों ६:२३इ) (अनन्त जीवन का मतलब पाप और नरक से छुटकारा और प्रभु यीशु मसीह के साथ स्वर्ग में हमेशा के लिए रहना)।

क्योंकि परमेश्वर ने हमसे इतना प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र इस पृथ्वी पर हमें हमारे पापों से और नरक की आग से छुटकारा दिलाने (बचाने) के लिए भेज दिया।

“क्योंकि परमेश्वर ने संसार (आप और मै) *से ऐसा प्रेम किया कि उसने* (परमेश्वर ने) *अपना एकलौता पुत्र* (यीशु) *दे दिया ताकि जो कोई उस पर* (यीशु पर) *विश्वास करे, वह नष्ट न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।”*
(यूहन्ना ३:१६)

प्रभु यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र आया और हमारे स्थान पर वह मरा ताकि वह अपने पापरहित जीवन से और बहुमूल्य लहू से पाप की किमत चुकाएं। यीशु दफनाया गया और परमेश्वर ने उसे मृतको में से जीवित किया। (रोमियों ५:८, ८:३२, १०:६इ देखें)

“....बिना लहू बहाए पाप की क्षमा नही होती” (इब्रानियों ६:२२)

“क्योंकि शरीर का प्राण लहू में रहता है। उसको मैने तुम लोगों को वेदी पर चढ़ाने के लिए दिया है ताकि तुम्हारे प्राणों के लिए प्रायश्चित किया जाए, क्योंकि प्राण के कारण लहू ही से प्रायश्चित होता है।” (लैव्यव्यवस्था १७:११, १४, उत्पत्ति ६:४)

“जो पाप से अज्ञात था, उसी को (यीशु) *परमेश्वर ने हमारे लिए पाप ठहराया ताकि हम उसमें* (यीशु में) *परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं।”* (२ कुरुन्थियों ५:२१)

परमेश्वर ने अपना भाग पूरा किया। अब <u>आपकी</u> बारी है। <u>अब</u> <u>आपको</u> क्या करना है? पढ़ते रहें ......

प्रभु यीशु ने कहा, यदी कोई स्वर्ग जाना चाहता है, उन्हें अपनी आत्मा में जो वास्तव में आदम से विरासत में मिली (जो वास्तव में आदम के पाप के द्वारा मर गयी) उसमें

नया जन्म पाना चाहिए, नए सिरे से जन्में। यीशु ने उत्तर दिया, *"मै तुमसे सच सच कहता हूं कि जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्में तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नही कर सकता।"* (यूहन्ना ३:५)

{यहां पानी का मतलब परमेश्वर का वचन है, जिसे आप अभी पढ़ रहें है और आत्मा का मतलब (अंग्रेजी में कॅपिटल एस) परमेश्वर की पवित्र आत्मा है}

"तुमने नाशवान नहीं पर अविनाशी बीज से परमेश्वर के जीवित और सदा ठहरने वाले वचन के द्वारा नया जन्म पाया है," (१ पतरस १:२१)

अधिक स्पष्ट रीति से जानने के लिए, यदि एक पापी परमेश्वर के वचनों को सुनता है तब वचन उसके दिल को छूता है।

"परमेश्वर का वचन जीवित, प्रबल और दोधारी तलवार से भी अधिक बहुत तेज है। वह जीव और आत्मा को, गांठ-गांठ और गूदे-गूदे को अलग करके आर-पार छेदता है। वह मन की भावनाओं और विचारों को जांचता है।" (इब्रानियों ४:१२)

तब पवित्र आत्मा उसे उसके 'पाप' और 'धार्मिकता' और 'न्याय' के बारें में बताएगा। (यूहन्ना १६:७-१२ देखें) पवित्र आत्मा आपको यह समझने में सहायता करेगा कि आप (सब लोग) नरक की आग में जा रहे थे। यदि आप नम्र होकर परमेश्वर की ओर देखतें है और अपने पापों से पश्चाताप करतें है, तब परमेश्वरः

- आपको अपने पापों से बचाएगा,
- आपको विश्वास देगा कि प्रभु यीशु मसीह आपके लिए आपके स्थान पर मरने के लिए आया,
- आपको अनुग्रह (जिस कृपा के आप हकदार नही है) देगा कि आप यीशु मसीह को अपने जीवन का प्रभु और व्यक्तिगत उध्दारकर्ता के रुप में अंगीकार (मान लेना, अंगीकार) कर सके।

हमें अपने पापों को सीधे तौर पर परमेश्वर के सामने मान (अंगीकार करना, क्षमायाचना करना) लेना चाहिए और ईमानदारी से उससे पश्चाताप करना चाहिए। इसका मतलब है कि हमें अपने पापों के लिए परमेश्वर से सहमत होना चाहिए और उनसे दूर होना चाहिए उसके वचन के अनूसार पवित्र और सच्चा जीवन जीने के लिए परमेश्वर के पास आना चाहिए। परमेश्वर हमारे अंगीकार का इंतजार कर रहा है ताकि वह हमें हमारे पापों से माफ कर प्रभु यीशु मसीह के बहुमूल्य लहू के द्वारा शूध्द और सफेद कर सकें।

"यदि हम अपने पापों को मान लें तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुध्द करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है" (१ यूहन्ना १:६)

“आओ, हम आपस में वादविवाद करें। तुम्हारे पाप चाहे लाल रंग के हों, तो भी वे हिम की नाई उजले हो जाएंगे और चाहें अर्गवानी रंग के हों, तो भी वे ऊन की समान श्वेत हो जाएंगे।” (यशायाह १:१८)

मान लिजीए कि आपने मेहमान को भोजन पर बुलाया है। आप क्या करेंगे? आप अपने घर को साफ करेंगे और मेहमान आकर आपके दरवाजे पर खटखटातें है तब आप द्वार खोलकर “मेहरबानी से अन्दर आईए” कहेंगे। सच?

जिस तरह हम मेहमान को स्वीकार करने के लिए अपने घर को साफ करतें है, उसी तरह हमें अपने दिल में यीशु को ग्रहण करने के लिए अपने दिल को साफ रखना चाहिए। पहला कदम यह है कि हम अंगीकार करें कि हमारा दिल “गन्दा” (पापों से भरपूर) है। सच कहें तो, हमारे दिल इतने खराब है कि हम देख भी नही सकतें कि वे कितने खराब स्थिति में है।

“मन तो सब वस्तुओं से अधिक धोखा देने वाला होता है, उसमें असाध्य रोग लगा है, उसका भेद कौन समझ सकता है?” (यिर्मयाह १७:९)

“....परमेश्वर ने मनुष्यों को सीधा बनाया, परन्तु उन्होंने बहुत-सी युक्तियां निकाली है।” (सभोपदेशक ७:२९)

साबून और पानी हमारे दिल को साफ नही कर सकते। सिर्फ प्रभु यीशु मसीह का बहुमूल्य लहू ही हमारे पापमय दिलों को साफ कर सकता है।

“....उसके पुत्र यीशु का लहू हमें सब पापों से शूध्द करता है” (१ यूहन्ना १:७३)

“ हमको उसके (यीशु) *लहू के द्वारा छुटकारा, अर्थात पापों की क्षमा उसके उस अनुग्रह के धन के अनूसार मिली है, जिसे उसने सारे ज्ञान और समझ सहित हम पर बहुतायत से किया है।”* (१ यूहन्ना १:७-८)

“तुम जानतें हो कि तुम्हारा निकम्मा चाल-चलन जो पूर्वजों से चला आता है, उससे तुम्हारा उध्दार चांदी-सोने अर्थात नाशवान वस्तुओं के द्वारा नही हुआ, पर निर्दोष और निष्कलंक मेमने अर्थात मसीह के बहुमूल्य लहू के द्वारा हुआ।” (१ पतरस १:१८-१९)

हमारा शरीर घर और दिल द्वार है। यह अन्दर से बन्द है। हमें इसे खोलना है, द्वार खोले और अपने दिल में यीशु को आमंत्रित करें।

“देख, मै द्वार पर खड़ा हूं और द्वार खटखटा रहा हूं। यदि कोई मेरी आवाज सुनकर द्वार खोलेगा तो मै उसके पास भीतर आऊंगा और उसके साथ भोजन करुंगा और वह मेरे साथ भोजन करेगा।” (प्रकाशितवाक्य ३:२०)

इसलिए, प्रिय मित्र, क्या आप मेहरबानी से अब यह छोटी प्रार्थना कहेंगे ताकि आप आपने दिल में यीशु को आमंत्रित कर सके? इसे सिर्फ एक मिनट लगता है ! बाइबल कहती है,

“यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु मानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उध्दार पाएगा। धार्मिकता के लिए मन से विश्वास किया जाता है, और उध्दार के लिए मुंह से अंगीकार किया जाता है।” (रोमियों १०:९-१०)

मेहरबानी से सावधानीपूर्वक पढ़े, विश्वास करके प्रार्थना कहें, ताकि आप अपने स्वयं के कानों से सुन सकें। यह बहुत आवश्यक है कि आप अपने दिल से गंभीरतापूर्वक प्रार्थना करे।

और याद रखे कि आप परमेश्वर से प्रार्थना कर रहें है, मुझसे नही।

आईए, अब हम प्रार्थना करें ……

प्रिय परमेश्वर, मै पापी हूं। मुझे क्षमा करें। मेहरबानी से मेरे पापों को क्षमा करें। प्रभु यीशु मसीह के लहू से मुझे शूध्द कर और मुझे हिम की नाई श्वेत कर। मै विश्वास करता हूं कि प्रभु यीशु मसीह मेरे लिए मारा गया, और दफनाया गया। मै विश्वास करता हूं कि आपने प्रभु यीशु मसीह को मृतको में से जीवित किया।
अब मै प्रभु यीशु को अपने जीवन का प्रभु और उध्दारकर्ता ग्रहण करता हूं।
मेरे प्रभु यीशु, मेहरबानी से अब मेरे दिल में आ।
प्रभु यीशु, मै अपनी आत्मा, मन और शरीर तुझे सौंपता हूं।
प्रभु यीशु के नाम से मै अपने जीवन के शैतान और उसके कार्यो को डाँटता हूं।
प्रभु यीशु, मेहरबानी से अपनी पवित्र आत्मा से मुझे भर दे और मुझे अपनी इच्छा के अनूसार बना और मुझे हर सच्चाई में मार्गदर्शन कर।
पिता, मै तुझे मेरे जीवन को बचाने और मेरे पापों को क्षमा करने और अपनी बहुमूल्य संतान बनाने के लिए धन्यवाद देता हूं।
यीशु के नाम से मै प्रार्थना करता हूं। आमीन।

अब यदि सचमुच गंभीरता से अपने दिल से आपने प्रार्थना की है, तब हे मेरे प्रिय मित्र, मै आपसे एक साधारण सवाल करने जा रहा हूं। सोचें और मुझे बताएं:

यीशु यीशु अभी कहाँ है?

.
.
.
.

यदि आपका जवाब है कि “यीशु अब मेरे दिल में है”, तब मै विश्वास करता हूं कि आपने सचमूच प्रार्थना किया है। (यदि आपका जवाब नही है, तब मेहरबानी से सावधानीपूर्वक अब प्रार्थना करें।)

हाँ, अब प्रभु यीशु आपके दिल में है। जब हम कुछ प्राप्त करतें है तब हम "धन्यवाद" कहतें है। नही? धन्यवाद देना विश्वास को व्यक्त करने का सीधा तरिका है। मेहरबानी से कहें, "धन्यवाद यीशु !"
जब तक कि आप यीशु को अपना प्रभु और उध्दारकर्ता ग्रहण करने की प्रार्थना नही कर लेते तब तक परमेश्वर के साथ आपका रिश्ता "सृष्टिकर्ता और उसकी सृष्टि" है। लेकिन अब वह "प्रेमी पिता और प्रिय पुत्र, पुत्रियां" में बदल गया है। मेहरबानी से इसे भी समझें कि जब तक कि आपने प्रभु यीशु को अपना प्रभु करके ग्रहण नही किया तब तक शैतान आपका पिता था। लेकिन अब, परमेश्वर आपका पिता बन गया और आप उसके बहुमूल्य संतान बन गए। (यूहन्ना ८:४४) देखें कि हम उसके कितने कर्जदार है !!

किसी भी व्यक्ति को परमेश्वर की संतान बनने के लिए यूहन्ना १:१२-१३ के अनूसार सिर्फ एक ही शंर्त है... *"परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उसने उन्हें परमेश्वर की संतान होने का अधिकार दिया, अर्थात उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास करतें है।"*

इस संसार में एक चीज प्रेम के सिवां हम सब कुछ शक्ति या पैसो से पा सकतें है। यही बात परमेश्वर हमसे चाहंता है। बहुत से लोग परमेश्वर के पास अपनी कुछ बात करवाने के लिए जातें है, और उसके बाद वे अपनी इच्छा के अनूसार चले जातें है।

जब हम भोजन तैय्यार करतें है, तब हम उसे चखकर देखतें है कि वह कितना स्वादिष्ट बना है। यदि वह स्वादिष्ट बना है तब हम उसे दूसरों को देतें है। उसी प्रकार, मैने अपने प्रभु यीशु के प्रेम को चखा है और देखा है कि वह कितना भला है। इसीलिए मै आपका हौसला बढाना चाहती हूं कि आप उसे अपने दिल और जीवन में आमंत्रित करे। हमे यह समझना चाहिए कि परमेश्वर ने हमारे लिए क्या किया है और हम उसे अपने सारे दिल, मन, शक्ति और बुध्दि से प्रेम करें। (लूका १०:२७)

"परन्तु परमेश्वर हम पर अपना प्रेम इस प्रकार प्रगट करता है कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिए मरा।" (रोमियो ५:८)

"वह जिसने अपने निज पुत्र (यीशु) *को भी रख न छोड़ा, परन्तु उसे हम सब के लिए दे दिया, वह उसके साथ सब कुछ क्यों न देगा।"* (रोमियों ८:३२)

वचन के अनूसार, अब आप बचाए (नया जन्म) गए हों। अब आप परमेश्वर के परिवार में नवजात शिशु हो। इसलिए आनन्दित हो और खुशियाँ मनाएं। नया जन्म का मतलब है कि प्रभु यीशु मसीह में "एकदम नया व्यक्ति"। यही परमेश्वर आपसे चाहंता है।

"यदि कोई व्यक्ति मसीह में है तो वह नई सृष्टि है। पुरानी बातें बीत गई है। देखो, वे सब नई हो गई है।" (२ कुरिन्थियों ५:१७)

यह परमेश्वर की आसान “उध्दार की योजना” है, जिसे “नया जन्म पाना” भी कहतें है।

अधिक जानकारी के लिए .....

सुसमाचार आखिर क्या है?

जब अवसर दिया गया तब मनुष्य ने परमेश्वर के बदले पर शैतान जीवन क बदले मृत्यू, स्वर्ग के बदले नरक, आशीष के बदले स्राप को चूना। सुसमाचार प्रेम का संदेश और मनुष्य के मूर्ख चूनाव का परमेश्वर की ओर से क्षमा देना है।

सुसमाचार यह बताता है कि यदि मनुष्य अपने पापमय स्वभाव का अंगीकार करता है और विश्वास करता है कि प्रभु यीशु ने मनुष्य के पापों के लिए अपना बहुमूल्य लहू बहाया और मृतको में से जी उठा तब प्रेमी और क्षमा करनेवाला परमेश्वर मनुष्य के पापों को क्षमा करने और उसे अनन्तकाल तक प्रेम करने के लिए तैय्यार है। परमेश्वर उन लोगों को अधिकार देता है जो अपने संपूर्ण दिल से उसकी संतान बनना अंगीकार करते और विश्वास करते है। यह भी मनुष्य के चूनाव पर निर्भर है।

इस बात को आसान बनाने के लिए, आपने किसी खोई हुई वस्तु या खोएं हुए व्यक्ति के लिए जाहिरात को अखबार या टैलिविजन पर देखा होगा। जाहिरात देनेवाले व्यक्ति ने खोई हुई वस्तु लाने के लिए या व्यक्ति को ढूंढ़ने के लिए इनाम की घोषणा की होगी। इसे दान कहते है, जो सब लोगों के लिए है जो टेलिविजन देखते है या अखबार पढ़ते है। लेकिन इनाम सिर्फ उन लोगों को मिलता है जो उस खोई हुई चीज को वापस जाहिरात देनेवाले के पास लाते है। नही?

उसी प्रकार, प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के उध्दार का मुफ्त इनाम (सुसमाचार) सब लोगों के लिए रखा गया। संसार के सब लोगों को सुनने के लिए परमेश्वर मार्ग तैय्यार करेगा। लेकिन सिर्फ जो उस पर विश्वास करते है और उसे ग्रहण करते है वे उस उध्दार के इनाम को प्राप्त करेंगे। हमे उसे प्राप्त करने के लिए कोई किमत चुकानी की जरुरत नही है, इसलिए “परमेश्वर का मुफ्त दान” लिखा गया। (रोमियों ६:२३इ)

परमेश्वर को उसके उस दान के लिए जो वर्णन से बाहर है, धन्यवाद हो ! (२ कुरिन्थियों ९:१५)

“मुफ्त इनाम” का मतलब “सस्ता इनाम” नही है। उध्दार सबसे किमती है और यह परमेश्वर की ओर से मनुष्यों के अनमोल इनाम है क्योंकि किमत प्रभु यीशु ने (हमारे पापों के बदले) अपने बहुमूल्य लहू और जीवन के द्वारा चूका दी है। यह हमारे लिए परमेश्वर का प्रेम है।

मान लीजिए कि, मैने आपको इनाम के तौर पर एक कलम दी। हो सकता है कि आप कहे, “अरे यह तो सिर्फ एक कलम है” और लापरवाही से उसे कहीं भी

फेंक दे या आप कह सकते है, “अरे, यह कलम कितनी सुन्दर है” और उसे रोज इस्तेमाल करे। यह आपका चूनाव है ! आपके उध्दार को जीवित रखे !!! परमेश्वर आपको बहुतायत से आशीषे दे !

बाइबल (परमेश्वर का वचन) परमेश्वर की ओर से आपके और मेरे लिए और समस्त मनुष्यजाति के लिए “हिदायत पुस्तिका” है। परमेश्वर की हिदायते हमें बताती है कि कैसे जीवन जीना है....हमें क्या और क्या नही करना चाहिए.... और हमें यह भी हिदायत मिलती है कि यहां के बाद के लिए जीवन की तैय्यारी कैसे करना है। सिर्फ पवित्र बाइबल ही हमें स्वर्ग और नर्क के बारें में स्पष्ट रीति से बताती है। यदि हम किसी नए स्थान, देश में जाने की योजना बनातें है तब हम अधिक से अधिक उस स्थान, देश की जानकारी हासिल करने की कोशिश करते है, वहाँ कैसे जाना है, कहाँ ठहरना है, कौनसे स्थानों को देखना है, किन चीजों को कहाँ से खरिदना है, आदी...तभी हम वहाँ जाएं या न जाएं इस बात का फैसला करेंगे, नही? इसलिए हमें यदि हम चाहते है कि प्रभु यीशु मसीह के साथ इस जीवन के बाद स्वर्ग में अनन्तकाल तक हम जीवन बिताए तब हमें सावधानीपूर्वक उसके वचनों का अध्ययन करना है कि यहाँ उसकी इच्छा के अनूसार कैसे जीवन बिताएं।

इस संसार में हर जन्म (जीवन) के लिए एक बीज और अंडकोष की आवश्यकता होती है। उसी प्रकार आत्मिक संसार में भी “अंडकोष” हमारी आत्मा है और “बीज” अविनाशी अनन्तकाल परमेश्वर का वचन है।

“तुमने नाशवान नहीं बरन अविनाशी बीज से परमेश्वर के जीवित और सदा ठहरने वाले वचन के द्वारा नया जन्म पाया है, क्योंकि हर प्राणी घास के समान नश्वर है। प्राणी की सारी शोभा घास के फुल के समान है। घास सूख जाती है और फूल झड़ जाता है। परन्तु प्रभु का वचन युगानुयुग स्थिर रहेगा। यही वह परमेश्वर का वचन है जो तुम्हे सुनाया गया था” (१ पतरस १:२३-२५)।

जैसे पहले बताया गया कि अब आप परमेश्वर के परिवार में नए जन्में शिशु के समान हो। नवजात शिशु का मुख्य भोजन दूध होता है, *“परमेश्वर का वचन आत्मिक निर्मल दूध है”* (१ पतरस २:२)

“मनुष्य केवल रोटी ही से नही, परन्तु परमेश्वर के हर वचन से जो उसके मुख से निकलता है, जीवित रहेगा,।” (मत्ती ४:४)।

इसलिए, मेहरबानी से अपनी बाइबल को रोज पढ़े, अध्ययन करें और मनन करे, और सुसमाचार को दूसरो को भी बांटे। इस प्रकार, आप मसीह में बलवन्त होगे। बाइबल कहती है, हमारे “भले कार्य” परमेश्वर के सामने “मैले चिथड़ों” के समान है। (यशायाह ६४:६)। हमारी कलीसिया या संस्था हमें नरक की आग से नही बचा सकती। हमारे पासबान या प्रिस्ट या मूल्लाह हमें नरक की आग से नही बचा सकते। हमारे पाप के कारण सब लोग पाप के भागीदार है, वही स्थान है, जिसके हम लायक है ! (रोमियो ६:२३) कोई भी मनुष्य प्राणी हमें नरक की आग से नही बचा सकता, सिर्फ प्रभु यीशु मसीह ही हमें बचा सकता है !

“किसी दूसरे के द्वारा उध्दार सम्भव नहीं, क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया जिसके द्वारा हम उध्दार पा सकें।” (प्रेरितों के काम ४:१०,१२)।

बाइबल इस प्रकार से बताती है कि हम “स्वर्ग” (अनन्त जीवन) प्राप्त नही कर सकते। यह परमेश्वर की ओर से प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें दिया गया मुफ्त इनाम है। यह परमेश्वर से हमें विश्वास के द्वारा प्राप्त करना है !

“विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उध्दार हुआ है, यह तुम्हारी ओर से नहीं वरन् परमेश्वर का दान है, और न कर्मो के कारण है। ऐसा न हो कि कोई घमंड करे।” (इफिसियो २:८-९)।

परमेश्वर ने सुसमाचार (उध्दार) को उसके अनुग्रह (उस अनुग्रह के द्वारा जिसके हम योग्य नही थे) के द्वारा हमें उपलब्ध कराया, हमें विश्वास (विश्वास और भरोसे) के द्वारा प्राप्त (अपना) करना है !!!

दया और अनुग्रह क्या है?

दया और अनुग्रह में समानता नही लेकिन वे एक ही सिक्के के दो बाजू है। मनुष्य परमेश्वर की समानता में उसे प्रेम करने, उसकी आराधना करने और उसकी आज्ञा मानने के लिए बनाया गया। परमेश्वर ने सिर्फ मनुष्य को चुनने का अवसर दिया, और मनुष्य ने परमेश्वर की आज्ञा न मानकर उसके विरोध में पाप करना चुन लिया। इस प्रकार हम बिना आशा के उस नरक की आग के दोषी बन गए।

दया वह है जो परमेश्वर हमारे पापों को अनदेखा कर जिसके हम लायक थे उस नरक की आग न्याय की सजा वह रोक लेता (हमें नही देता) है। अनुग्रह वह है जो परमेश्वर हमें मुफ्त में अनन्त जीवन देता है और प्रभु यीशु मसीह के द्वारा स्वर्ग का वादा जिसके हम हकदार नही थे।

मान लीजिए कि आप एक बड़ी राशि के कर्जदार है। एक दिन वह व्यक्ति आपके पास आता है और जितनी राशि उस व्यक्ति की आपके उपरा बनती है उससे दूगनी राशि का चेंक वह आपके नाम लिख देता है। वह कहता है कि उसने आपका कर्ज माफ कर दिया और आपको दान के रुप और राशि दे रहा है। यह अनुग्रंह का एक कार्य है। इस संसार का सबसे बड़ा अनुग्रह का कार्य कलवरी के क्रुस पर हुआ जब प्रभु यीशु ने आपको अनन्त मृत्यू से आपके स्थान पर मरकर आपको छुड़ाया है। यद्यपि आपने ऐसा कुछ नही किया कि आप उसके योग्य बनें और ऐसी कोई आशा नही कि उाप उसे उसके लिए वापस किमत अदा कर सके।

इसे और भी आसान बनाने के लिए, परमेश्वर जो आपसे, मुझसे और संपूर्ण मानवजाति से प्रेम करता है अपने 'अनुग्रह' की भरपूरी के साथ आया न्याय कर हमारे पापों को क्षमा किया ताकि वह अपनी इच्छा से बहाना बनाकर बिना शर्त हमसे प्रेम कर सके। यह वर्णन से बाहर है ! उसे जानने के लिए आपको उसे परखना चाहिए। (भजनसंहिता ३४:७)।

यदि आप उसे अपना प्रभु और उध्दारकर्ता ग्रहण करे बिना मर जातें है, तब आप उस अनबुझी, बिना समाप्त होनेवाली नरक की आग में खो जाओगे। यही नए जन्म या बचाए हुओं की गंभीरता है !!! यीशु ही स्वर्ग के लिए एक मात्र मार्ग है ! (यूहन्ना १०:६, १४:६)।

यदि आपका जन्म मसीही परिवार में हुआ है, तब आप सोचते है कि आप आप ही आप मसीही बन जातें है। लेकिन यह सच्चाई नही है। सच्चाई यह है कि कोई भी मसीही बनकर जन्म नही लेता या पैदा होकर या परवरिश लेकर कोई मसीही बनता है। एक व्यक्ति के लिए यह कोई गलत कार्य नही है कि वह मुस्लिम या हिन्दू या और कोई धार्मिक परिवार में जन्म ले। क्योंकि यह लिखा है कि, *"क्योंकि परमेश्वर किसी का पक्षपात नही करता।"* (रोमियों २:११)। प्रभु यीशु मसीह संपूर्ण मनुष्य जाति के लिए मरा। (यूहन्ना १:१२-१३, रोमियो ५:६ देखें)। परमेश्वर का कोई धर्म नही है, वह सबसे प्रेम करता है !!!

अब न कोई यहूदी रहा और न यूनानी, न कोई नर, न नारी, न खतना वाला न खतनारहित, न जंगली, न स्कूती, न दास और न स्वतंत्र, न कॅथलिक न प्रोटेस्टंट,

न आर्थोडक्स न अपोस्कोपोलियन, न मेथोडिस्ट न बॅप्टिस्ट, न नामधारी मसीही न मुस्लिम, न हिन्दू न बुध्द, केवल मसीह सब कुद और सब में है। (संदर्भ गलतियों ३:२८, कुलुस्सियों ३:११)।

"यहूदियों और यूनानियों में कुछ भेद नहीं, इसलिए कि वह सबका प्रभु है, और वह अपने सब नाम लेने वालों को उदारता से आशीष देता है। जो कोई प्रभु (यीशु) *का नाम लेगा, वह उध्दार पाएगा।"* (रोमियों १०:१२-१३)।

बहुत से लोग विश्वास करतें है कि न परमेश्वर, न स्वर्ग और न शैतान है। थोड़े से लोग विश्वास करतें है कि प्रेमी परमेश्वर हमें कभी नरक में नही डालेगा। बहुत से लोग नरक की कल्पना पर उपहास करते है। लेकिन नरक एक वास्तविकता है ! कुछ लोग सोचतें है कि वे परमेश्वर को अंतिम पलों में पुकारेंगे, लेकिन दुःख की बात है कि अंतिम घड़ी में वे गिरेंगे और उनकी मृत्यू हो जाएगी। उन्हें अंतिम अवसर नही मिलेगा ! पहला अवसर ही उत्तम अवसर है, मेहरबानी से उसे बुध्दिमानी से इस्तेमाल करे। लगभग बचाया हुआ, पूर्णतः खोया हुआ है !

प्रसिध्द लेखक देन्त ने इस प्रकार लिखा कि नरक के द्वार पर एक फलक है जिस पर इस प्रकार से लिखा है, "जो प्रवेश करते है, उनके लिए वीरानी आशा है" क्योंकि नरक से कोई छुटकारा नही है।

सबसे बुध्दिमान राजा सुलैमान ने लिखा, *"बुध्दिमान अधोलोक में पड़ने से बच जाता है"* (नीतिवचन १५:२४)। इसका मतलब है कि यदि कोई व्यक्ति सौ वर्ष तक जीवित रहता है, वह चर्च या मस्जिद या मंदिर नियतित रुप से जाता है, हमेशा प्रार्थना करता है, दान देता है, गरिबों की सहायता करता है, जब वह बालक ही था तब उसका बप्तिस्मा भी हुआ है, प्रभु भोज भी लेता है, आदी...आदी...लेकिन प्रभु यीशु मसीह के साथ उसका व्यक्तिगत रिश्ता नही है तो वह असफल है। जब तक की वह प्रभु यीशु मसीह को अपना उध्दारकर्ता के रुप में पुकार नही लेता तब तक यीशु मसीह उसे उस नरक की आग से नही बचा सकेगा, इसलिए नही की उसमें सामर्थ्य नही है या वह अयोग्य है लेकिन इसलिए क्योंकि वह अपने वचनों को नही बदलता।

"प्रभु यीशु मसीह कल आज और युगानुयुग एकसा है।" (इब्रानियों १३:८)।

"क्योंकि मै यहोवा बदलता नही।" (मलाकि ३:६)।

बच्चे, परमेश्वर के दान है। माता- पिता अपने बच्चों से प्रेम करें। जब बच्चें अपने माता-पिता से प्रेम करते है और उनकी आज्ञा का पालन करतें है, तब उन्हें बहुत प्रसन्नता होती है। अनाज्ञाकारी बच्चें उनके माता-पिता के लिए हमेशा बोझ होते है। हमें हमेशा परमेश्वर के आज्ञाकारक संतान बनना है। इससे परमेश्वर को प्रसन्नता होती है।

अब परमेश्वर के अनुग्रह से आप परमेश्वर की संतान बन गए। आपके स्वर्गीय पिता परमेश्वर के लिए आपका पहला कदम पानी का बप्तिस्मा लेना है, (रुपक रीति से) अपने आपको प्रभु यीशु मसीह की मृत्यू, दफनाने और पुनरुत्थान की

समानता में दर्शाना ताकि आप पुनरुत्थान के जीवन के नएपन में चल सको। बप्तिस्मा के द्वारा हम मसीह को पहिन लेतें है। आज्ञापालन ही आशीष का एक मात्र मार्ग है। (रोमियों ६:३-४, गलतियों ३:२७, कुलुस्सियों २:१२ आदी..)।

अब परमेश्वर ने आप पर अपनी छाप लगानी है कि आप अब उसके है। आपके अन्दर की पवित्र आत्मा एक राशी के रुप में है कि आप परमेश्वर के अनन्त परिवार के हो। आपको पवित्र आत्मा की भरपूरी की आवश्यकता है जो अन्यन्य भाषा बोलने के द्वारा, और नया पवित्र और विजयी मसीही जीवन जीने के द्वारा साबित होगा।

मान लीजिए कि हम नया घर बनातें है। हम उसे जरुरत के सामान के अनूसार संवारते हैः नये सोफा, भोजन करने की मेज, कुर्सीयां, सजा संवरा सोने का कमरा, रसोईघर के सामान आदी। लेकिन यदि हमारे पास बिजली ही नही हो तो हम कैसे रह सकते है? उसी प्रकार नया जन्म पाए हुए मसीही को पवित्र आत्मा की भरपूरी और पवित्र आत्मा का वास (अभिषेक) जरुरी है। यदि प्रभु यीशु मसीह को इस पृथ्वी पर रहते हुए पवित्र आत्मा की भरपूरी (अभिषेक) की आवश्यकता हुई, तब हमें उसकी कितनी अधिक जरुरत होनी चाहिए ! (लूका ४:१, यूहन्ना ३:३४, प्रेरितों के काम १०:३८, आदी..) (लूका ११:११-१३)।

बाइबल में हमारी तुलना पेड़ों से की गयी। प्रभु यीशु मसीह ने कहा कि अच्छा पेड़ उसके फलों से और बूरा पेड़ उसके बूरे फलों से पहचाना जाता है। जो पेड़ अच्छा फल नही लाता वह काटकर आग

(नरक) में डाला जाएगा। बाइबल हमें आज्ञा देती है कि हम पश्चाताप कर अच्छा फल लाएं

(विश्वास के भले कार्य)। (याकूब २:१४-२६)।
“इसलिए अज्ञानता की उपेक्षा करके परमेश्वर अब हर जगह के मनुष्यों को आज्ञा देता है कि पश्चाताप करें। ...और यरुशलेम से प्रारंभ कर के सब जातियों में उसके नाम से पापों की क्षमा के लिए मनफिराव का प्रचार किया जाएगा।” (प्रेरितों के काम १७:३०, लूका २४:४७)।

पश्चाताप वास्तव में क्या है?

आप (सब लोग) नरक की ओर जा रहे थे। जाते समय आपने प्रभु यीशु मसीह का सुसमाचार सुना। तब पवित्र आत्मा ने आपको 'पाप', 'धार्मिकता' और 'अनन्त न्याय' के बारे में समझाया और आप समझ गएं कि आप पापी है और आप नरक की ओर जा रहे थे। आप वहीं पर रुक गए, अपने पापों से फिरे और परमेश्वर से अपने पापों के लिए माफी (दुःख प्रगट किया) मांगी, और फैसला किया कि आप मसीह के पीछे चलेंगे। यह पश्चाताप की शुरुआत (पहला कदम) है।

इसका साधारण मतलब है, 'पीछे की ओर घुमना' यानि ईश्वररहित जीवन से परमेश्वर की ओर घुमना। मेहरबानी से अपने दिल को नम्र करो और पवित्र आत्मा को इजाजत दो कि वह आपके जीवन को...आपके व्यवहार, आपके देखने , विशेषकर आपकी बोलचाल को, परमेश्वर के वचन के द्वारा बदल दें।

; ककरू २ ब्वतपण ५रू१७द्ध ेमतमण

जो कुछ भी हम अपने जीवन में करतें हैः चर्च, मंदिर, मस्जिद में जाना, प्रार्थना और उपवास करना, गीत गाना, और भले कार्य करना आदी..सब कुछ यदि बिना पश्चाताप के हो तो वे 'मृत कार्य' है।

(इब्रानियों ६:१)। इसलिए कि हम अपने पापों में मरे हुए है, हम कुछ भी भला कार्य करने में असमर्थ है, जिससे परमेश्वर प्रसन्न होता है (कुलुस्सियों २:१३)। सिर्फ परमेश्वर ही हमें मृत्यू से जीवित रख सकता है (इफिसियों २:१)। परमेश्वर को इजाजत देकर हमारे मनों को उसे समर्पित कर हमें मसीह में नए सृष्टि बनना है। तभी हम अपने जीवन के लिए परमेश्वर की इच्छा को जान सकतें है, और संसारिक जीवन से फिरकर ऐसा जीवन जी सकतें है जिससे परमेश्वर प्रसन्न होता है (रोमियों १२:१-२)। सिर्फ परमेश्वर ही हमें सहायता कर सकता है !

जिस व्यक्ति के दिल में प्रभु यीशु मसीह है वह कभी भी अपने खुशी से या चिंता का डर, अपराध, शर्मिंदगी, शर्म, डर, आशाहिनता, अकेलापन से जीवन नही जी सकता। इन सब बातों से वह प्रभु यीशु मसीह के द्वारा स्वतंत्र हो जाता है (रोमियों ८:१७-२२, ८:२)।

जिन लोगों से आप रोज मिलतें है, उन्हें आपके जीवन में बदलाव दिखना चाहिए, और उन्होंने आपसे पूछना चाहिए, "अरे, आपको कुछ हुआ है' यह क्या है? आप तो ऐसे नही थे"। तब आप उनसे कह सकते है, "यह इसलिए है, क्योंकि प्रभु यीशु मसीह मेरे अन्दर है, उसने मुझे बदल दिया है।"

इस अवसर का लाभ उठाकर उन्हें सुसमाचार के बारें में बताएं, प्रभु यीशु मसीह को अपने जीवन में आमंत्रित कर वे कैसे परमेश्वर की संतान बन सकतें है और नया जन्म पाकर बचाए जा सकतें है। परमेश्वर आपको इस कार्य के लिए सामर्थ्य दे।

मसीही जीवन वास्तव में दो व्यक्तियों के बीच एक व्यक्तिगत रिश्ता है, मेरा और प्रभु यीशु मसीह के बीच और आपका और प्रभु यीशु मसीह के बीच। माता-पिता

को अपनो बच्चों को बातें करते देख अच्छा लगता है। और बच्चों को भी अपने माता-पिता की अच्छी बातें भली लगती है। प्रार्थना हमारे और परमेश्वर स्वर्गीय पिता और उसके संतानो के बीच संवाद है। हम प्रार्थना में परमेश्वर पिता से बातें करतें है और जाते है। जब तक परमेश्वर बातें करना शुरु करता है तब तक हम चले जातें है। मेहरबानी से धीरज और सावधानीपूर्वक प्रार्थना में रुके रहें ताकि परमेश्वर की आवाज को सुन सकें और इस प्रकार प्रभु यीशु मसीह के साथ नजदिकी रिश्तें में बने रहें। अपने रिश्तें को जीवित रखें।

याद रखें ! हममें से हर एक को न्याय के दिन परमेश्वर के सामने खड़ा रहना है और इस पृथ्वी पर जो हम करतें, बोलतें, और सोचतें है उसका लेखा देना है। बाइबल कहती है, *"और जैसे मनुष्यों के लिए एक ही बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त किया गया है।"* (इब्रानियों ९:२७)। परमेश्वर ने समय नियुक्त किया है, ताकि वह हममें से हर एक से व्यक्तिगत रुप से आमने-सामने न्याय के दिन मिल सके। इसमें कोई छुट नही है ! कोई भी इसमें से छुट नही सकता ! इसलिए इस प्रकार से जीए कि हमें कल परमेश्वर के आगे खड़े होना है।

हर बातों को जानने वाला, सर्वज्ञानी परमेश्वर जानता है कि "मनुष्य क्या बनेगा"। लेकिन उसने "मनुष्य क्या बनेगा" इस प्रकार न्याय नही किया। परमेश्वर किसी का पक्षपात नही करता। (व्यवस्थाविवरण १०:४७, रोमियों २:११, याकूब २:६) जब कुछ असफल होता है, कुछ गलत बातें हमारे जीवन में होती है, तब हम अक्सर कहतें है, यह हमारा नसीब है। लेकिन हमारा नसीब अकस्मात ही नही है, यह एक चुनाव की बात है। यह एक ऐसी चीज नही है, जिसके लिए हम इंतजार करतें है, यह एक ऐसी चीज है जिसका हमें चुनाव करना है और उसे पाना है। समय और लहरें और इसी प्रकार मृत्यू भी किसी का इंतजार नही करती। मृत्यू किसी पर भी किसी भी समय आती है। किसी के मृत्यू के पश्चात कोई भी कुछ नही कर सकता।

हर एक क्रिया की प्रतिक्रिया है, और हर एक चुनाव का परिणाम है। हमारा नसीब हमारे चुनाव का परिणाम है। इसलिए परमेश्वर ने मनुष्य जाति को 'चुनने की आजादी' दी है। बहुत से लोग इस बात को नही जानतें है कि परमेश्वर ने हमें आशीष या स्त्राप, या स्वर्ग या नरक चुनने की आजादी दी है। (व्यवस्थाविवरण ३०:१६)। लेकिन यह आपका बुध्दिमानी से भरा चुनाव है, जो आप इस पृथ्वी पर रहतें हुए करतें है, ताकि आप स्वर्ग जा सकें।

हम नहीं जानतें कि कल क्या होगा, बाइबल इस प्रकार कहती है कि मृत्यू कभी भी बिना किसी पूर्व सूचना के आती है। हमें हमेशा तैय्यार रहना चाहिए।

क्या आपने उपर दी गई प्रार्थना को दोहराया? और यदि नही, तों मै आपसे फिर एक बार बिनती करता हूं कि अब आप प्रार्थना करें और परमेश्वर के अनन्त जीवन का मुफ्त दान पाएं, और आनेवाले परमेश्वर के क्रोध और नरक की आग से बचें।

इसलिए आईए, हम प्रार्थना करें :

प्रिय परमेश्वर, मै पापी हूं। मेहरबानी से मेरे पापों को क्षमा कर। प्रभु यीशु मसीह के बहूमुल्य लहू से धोकर मुझे साफ कर, और मुझे हिम की नाईं श्वेत कर। मै विश्वास करता हूं कि यीशु मेरे लिए मरा, और गाड़ा गया। मै विश्वास करता हूं कि आपने यीशु को मृत्यू में से जीवित किया। **अब मै यीशु को अपने जीवन का प्रभु और अपना उध्दारकर्ता करके ग्रहण करता हूं।** मेरे प्रभु यीशु, मेहरबानी से अब आप मेरे दिल में आएं। मै अपनी आत्मा, मन और शरीर आपको सौपता हूं, प्रभु यीशु ! यीशु के नाम से मैं मेरे जीवन के उन शैतान और उसके कार्यो को डाँटता हूं। प्रभु यीशु, मेहरबानी से आप मुझे पवित्र आत्मा से भर दे और मुझे वही बना जो आप मुझे बनाना चाहतें है और मुझे सच्चाई में मार्गदर्शन कर। मै आपका धन्यवाद करता हूं। पिता, कि आपने मेरे पापों को क्षमा किया और मेरे जीवन को बचाया और मुझे आपकी बहुमूल्य संतान बनाया। यीशु मसीह के नाम से प्रार्थना करता हूं, आमीन।

यदि आज (इस साईट के द्वारा) आपने प्रार्थना किया और प्रभु यीशु मसीह को ग्रहण किया है, तब आप मुझे ेंतीं/ीपे.ड्रंपदह.सवअमण्वतह पर ई–मेल कर सकतें है ताकि मै भी आपके साथ खुशियां मना सकुं।

अब आप जानतें है कि यदि व्यक्ति ने प्रभु यीशु मसीह को अपना प्रभु और उध्दारकर्ता ग्रहण नही किया है तब वह व्यक्ति मृत्यू के पश्चात अनन्त नरक में चला जाता है। इसलिए तुरन्त इस वेब–साईट को अपने मित्र और अपने प्रिय रिश्तेदारों को भेजे। उन्हें भी आशीषें मिलने दें।

जब आप इसे बांटतें है, तब आपका 'आनन्द' बढ़ता है और दु:ख घटता है, जब आप उसे बांटतें है। सिर्फ एक क्लिक के द्वारा आप इसे अपने सब मित्रों को निचे दिए गए बड़े आसानी से भरे जाने वाले फॉर्म के द्वारा भेज सकतें है, ताकि इस खुशी के समाचार को बांटने के द्वारा आपकी खुशियां बढ़ जाएं ! वे सब मसीह में आशीषित हो।

मेहरबानी से इस साईट को निशाण लगाईएं और अपनी रोज की जिन्दगी में इसे दूसरों को बताने के लिए सिफारिस करें।

क्या आपके पास बाइबल है? मेहरबानी से यह तारिख (आज) आपके बाइबल में लिख लें, 'मैं बचाया गया हूं' (आज की तारिख) या 'मैने प्रभु यीशु मसीह को अपना उध्दारकर्ता ग्रहण किया है (आज की तारिख)' या इस दिन मै मसीही बना (आज की तारिख)। यह आपका आत्मिक जन्मदिन है।

यदि आपको कोई पूछे कि, "क्या आपका उध्दार हुआ है या आपका नया जन्म हुआ है?" आप कहें, "उसके अनुग्रह से, हां, "मेरा उध्दार हुआ है, मेरा नया जन्म हुआ है"। परमेश्वर आपको बहुतायत से आशीष दें।

"मैने तुमको जो परमेश्वर के नाम पर विश्वास करते हो, ये बातें इसलिए लिखी है कि तुम जानों कि अनन्त जीवन तुम्हारा है।" (१ यूहन्ना ५:१३)।

मेरे प्रभु और उध्दारकर्ता यीशु मसीह के बहुमूल्य नाम में, जो और नामों में उँचा है, मैं आपको सब स्वर्गीय और आत्मिक आशीषें देता हूं !

परमेश्वर पिता जो स्वर्ग में उसका प्रेम, प्रभु यीशु मसीह और उध्दारकर्ता की शांति और अनुग्रह और पवित्र आत्मा की संगति तुम्हारे साथ सदैव बनी रहें, आमीन।

मसीह में आपकी,

सारा

१ कुरिन्थियों ३:१०-१४ और इफिसियों १२:१३-१४ के अनूसार, हमें अक्सर यात्रा करने वाले यात्री के समान या क्रेडिट कार्ड खरिददार के समान इनाम के अंक हासिल करना चाहिए। आज्ञापालन का पहला कार्य बप्तिस्मा लेना, जिसके सबसे उंचे अंक है, दूसरा उंचा अंक दशमांश देनेवाले नया जन्म पाएं हुए को, तिसरा उंचा अंक आत्माओं को जीतने वाले को और चौथा उंचा अंक पवित्रता और जीवन में इमानदारी को दिया है। जिस प्रकार से सिनेमा हॉल में जमीन पर बैठने की, बेंच पर बैठने की, कुर्सियों पर बैठने की, एअरकंडिसन आदी..में बैठने की तिकिट होती है, इसी प्रकार स्वर्ग में भी इनाम हमारे इंतजार में है।